ढाका से वापसी पर

फ़ैज़ अहमद फ़ैज़

हम केः ठहरे अ नबी इतनी मदारातों के बाद
ि र बनेंगे आशना कितनी मुलाक़ातों के बाद

कब नज़र में आयेगी बे-दाग़ सब्ज़े की बहार
ख़ून के धब्बे धुलेंगे कितनी बरसातों के बाद

थे बहुत बे-दर्द लम्हे ख़त्मे-दर्दे-इश्क़ के
थी बहुत बे-मह्र सुब्हें मह्रबाँ रातों के बाद

दिल त चाहा पर शिकस्ते-दिल ने म ह्लत ही न दी
कुछ गिले-शिकवे भी कर लेते, मुना ातों के बाद

उनसे कहने गए थे "फ़ैज़" ाँ सदक़ा किये
अनकही ही रह गई व बात सब बातों के बाद

1974